मूल्य : 1.50 रुपये

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 44 अंक 04

अप्रैल 2008 बहाई वर्ष : 165

निगूढ़ वचन

हे मनुष्य के पुत्र !

मेरी अनन्तता मेरी सृष्टि है, मैंने तेरे लिये इसकी रचना की है। इसे तू अपने मंदिर का परिधान बना। मेरी एकता मेरा हस्तकौशल है, तेरे लिये ही मैंने इसे बनाया है। उससे स्वयं को भूषित कर ताकि अनन्तकालों तक तू मेरी अनन्त महिमा का प्राकट्य बिन्दु बना रहे।

–बहाउल्लाह

गुजरात की संस्थान प्रक्रिया में बढ़ता संवेग

पिछले दस महीनों से गुजरात में प्रशिक्षण संस्थान प्रक्रिया की गतिविधियों में एक लहर–सी उठी है। यह गहनता से सीखने का सत्र था विशेष रूप से ऐसे क्षेत्रों में जहां प्रशिक्षित संसाधनों का त्वरित विकास राज्य, क्षेत्रीय और समुदायसमूह के स्तर पर प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा हुआ है। संस्थानों के अनुसार सबसे अधिक प्राथमिकता के आधार पर वर्ष के दौरान चुने हुए चार समुदायसमूहों–नानापारा, उमरकुई, अमबिनिया और अहमदाबाद में सघन विकास कार्यक्रमों को लागू करने हेतु प्रशिक्षित संसाधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इन संस्थान अभियानों का प्रबंध किया गया।

पहला राज्य स्तरीय संस्थान अभियान मई 2007 में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान किया गया, जिसमें सौ से अधिक युवाओं ने भाग लिया था। अभियान दो स्तरों के पाठ्यक्रमों के आधार पर चलाया गया–निम्न स्तर में प्रतिभागियों ने रूही पुस्तक–1, 2 और 3 तथा उच्च स्तर में रूही पुस्तक–4 और 6 का अध्ययन पूरा किया गया। अलग से एक अन्य समूह में 60 युवा प्रतिभागियों ने 'अनुप्रेरकों के लिए प्रशिक्षण नियमावली' का प्रशिक्षण किया।

वार्षिक संस्थान योजना में ग्रीष्म और शरदकालीन अभियान को जोड़ने का प्रस्ताव रखा गया जिसमें एक वर्ष के दो अनुवर्ती अवकाशों में प्रतिभागियों द्वारा पाठ्यक्रम की श्रृंखला को पूरा किया जायेगा। ऐसा मानना था कि प्रतिभागी ग्रीष्म अभियान के दौरान पहली तीन पुस्तकों का अध्ययन करेंगे और जब वह शरद अभियान में शामिल होंगे तथा पूरी श्रृंखला पूर्ण करेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ अधिकतर प्रतिभागी जो शरद (नवम्बर 2007) अभियान में आये थे वे सभी ग्रीष्म अभियान में नहीं आये।

राज्य परिषद् ने अपने वार्षिक प्रतिवेदन में यह कहा "हमने यह भी सीखा कि नये अनुयायियों की भागीदारी का प्रतिशत राज्य स्तर के अभियान में आश्चर्यजनक कम था। इसलिए, हमने यह निर्णय लिया कि संस्थान प्रक्रिया क्षेत्रीय स्तर पर विस्तरित किया जाये और बाद में समुदायसमूह के स्तर पर जहां सघन अभियानों में सकारात्मक और प्रोत्साहनमय सीख मिली। संक्षिप्त में, पिछले कुछ महीनों में गुजरात में संस्थान प्रक्रिया को स्थापित और दृढ़ करने में महत्वपूर्ण उन्नति मिली है और हम आशा करते हैं कि आगे आने वाले महीनों में यह और तीव्र होगी। वर्ष में कम से कम दो राज्य स्तरीय संस्थान अभियान, अब प्रशिक्षण संस्थान कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गये हैं क्योंकि ये अभियान बड़ी संख्या में युवा खासतौर से युवा जिज्ञासुओं को प्रभावित करते हैं, जिससे उनके व्यक्तिगत और आध्यात्मिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है जो स्थानीय बहाई समुदायों के विस्तार और दृढ़ीकरण में सहयोग देता है। प्रशिक्षण संस्थान प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए चल रहे प्रयासों में एक और महत्वपूर्ण प्रयास के द्वारा प्राथमिक समुदायसमूहों के अंतर्गत कुछ नये क्षेत्रों को प्रभुधर्म के लिए खोलना,

शेष पृष्ठ 5 पर

इस अंक में

- गुजरात की संस्थान प्रक्रिया में बढ़ता संवेग 1
- हर्षोल्लास के साथ मनाया नवरूज़ 1
- सम्पादकीय 2
- पानी और साफ–सफाई 3
- रिज़वान का त्यौहार त्यौहारों का सम्राट 4
- दूसरा 45–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 5
- कोष संवर्धन प्रभाग से 6
- समाचारचित्र 7
- बहापुर पुकारे 8

हर्षोल्लास के साथ मनाया नवरूज़

21 मार्च को बहाई नववर्ष का त्यौहार पूरी दुनिया में हर्ष और आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया जाता है।

नाटिकाओं के कार्यक्रम का उपस्थित मित्रों ने भरपूर आनन्द उठाया।

बिहारशरीफ समुदाय में नवरूज़ का त्यौहार रामलखन प्रसाद

नवरूज़ के अवसर पर दिल्ली के युवाओं द्वारा प्रस्तुत नृत्य

उपवास के उन्नीस दिनों के दौरान अपने को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाते रहने वाले बहाई समुदाय ने अपनी–अपनी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के तत्वावधान में नववर्ष के कार्यक्रम आयोजित किये।

दिल्ली स्थित बहाई मंदिर में सुबह विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय बहाई मित्र शामिल हुए। मंदिर में आयोजित विशेष जलपान के साथ लोगों ने एक–दूसरे को नये वर्ष की शुभकामनायें दीं।

के आवास पर हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। बाल कक्षा के बच्चों, किशोरों और स्टडी सर्कल के प्रतिभागियों द्वारा नाटक, उद्धरण और गीत प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम में कुल 170 मित्रों ने भाग लिया जिसमें 60 जिज्ञासु थे।

अजमेर की स्थानीय आध्यात्मिक सभा की देखरेख में बहाई नववर्ष का उत्सव राधा किशन गुरुदयाल रेस्टोरेंट, मदार गेट में हर्षोल्लास के साथ मुकेश मिश्र की अध्यक्षता में मनाया गया। मुकेश मिश्र ने सभी उपस्थित मित्रों का

बहाई उपासना मंदिर में अपनी सेवा दे रहे विभिन्न राष्ट्रों के युवा नववर्ष उत्सव में शामिल हुए

शाम के समय दिल्ली के बहाई भवन के प्रांगण में स्थानीय आध्यात्मिक सभा की ओर से एक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 550 मित्रों ने भाग लिया। बहाई मित्रों द्वारा प्रस्तुत गीत–संगीत और नृत्य

स्वागत किया और नवरूज़ संदेश दिया। सभा का संचालन सभा के सचिव श्री जे. के. तुल्सियानी द्वारा किया गया।

पटना में भी नवरूज़ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादकीय

अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी वर्ष-पुरानी व्यवस्था की मृत्यु वेदना और नई व्यवस्था की प्रसव-पीड़ा

वर्ष 2008 को संयुक्त राष्ट्र ने पृथ्वी वर्ष घोषित किया है, जिसके द्वारा मौसम में आये परिवर्तन और विश्वव्यापी तापक्रम वृद्धि के व्यापक असर की ओर जनमानस का ध्यान आकर्षित किया है। यह स्वच्छता का भी वर्ष घोषित किया गया है। यह याद दिलाते हुए कि विश्व के हर तीसरे व्यक्ति को शौचालय की सुविधा उपलब्ध नहीं है। पिछले छह महीनों में जीवन आवश्यक वस्तुएं जैसे धान की कीमतों में 50 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि हुई है, यह भी एक गम्भीर विषय है। मानवजाति का भाग्य पर्यावरण से जुड़ा हुआ है और उससे अनुकूलित है। विश्व के जनमानस के सामान्य हित के लिए आवश्यक सभी साधन प्रकृति उपलब्ध कराती है, परन्तु मनुष्य के लालच ने प्रकृति के साधनों के वितरण में असमान्यता और तंगी जैसी समस्याओं को उत्पन्न किया है। मानवजाति और प्रकृति दोनों का ही भाग्य अब एक साथ ही अस्त हो रहा है।

वर्तमान पारिस्थितिक संकट निश्चित ही एक धार्मिक और आध्यात्मिक समस्या है और उसे तुरन्त उसी स्तर पर योग्य प्रतिक्रिया मिलना आवश्यक है। विश्व के प्रमुख धर्म अपने ही विशेष मार्ग के सहारे और अपनी अनोखी नैतिक और आध्यात्मिक संकल्पनायें एवं मूल्यों के आधार पर मानवजाति के रवैये को और प्रकृति के साथ उसके सम्बन्ध को मार्गदर्शित कर सकते हैं। पर्यावरण की वर्तमान समस्याओं के प्रति बहाई दृष्टिकोण धर्म और विज्ञान के समन्वय के सिद्धांत पर आधारित है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें वह औजार उपलब्ध कराते हैं, जो हमें भौतिक विश्व में जीवनयापन करने में सहायक होते हैं, लेकिन धर्म और आध्यात्मिकता के माध्यम से हम इन औजारों का उपयोग विनाश के लिए नहीं बल्कि कल्याण के लिए सीखते हैं।

बहाइयों के लिए प्रकृति और सारी सृष्टि उस निर्माता के दिव्य गुणों को प्रतिबिम्बित करती है, जिन्हें उनकी पूरी विविधता में स्वीकार करना होगा। देहाती क्षेत्र की सुन्दरता और हरियाली आत्मा का विश्व है। करुणा और दयालुता केवल मनुष्य के प्रति नहीं बल्कि हर जीवित वस्तु के प्रति होनी चाहिए और पशुओं के प्रति अत्याचार पूर्णता वर्जित है। प्राकृतिक विश्व एक एकीकृत रचना है, जिसमें विभिन्न प्रकार के जीव एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं, जैसे पशुओं द्वारा निर्मित कार्बन डाइऑक्साइड पर पौधों का निर्भर रहना और पौधों द्वारा निर्मित ऑक्सीजन पर पशुओं का निर्भर रहना। सहयोग और पारस्परिक व्यवहार प्रकृति के आवश्यक गुणधर्म हैं। परिवर्तन एक चल रही प्रक्रिया है लेकिन मानव के लालच और अवैचारिक कृति द्वारा उत्पन्न विनाशकारी और शक्तिशाली परिवर्तन प्रकृति सहन नहीं कर पाती। हमारा विश्व से एक जैविक सम्बन्ध है और मानव हृदय को उसके बाहरी पर्यावरण से अलग नहीं किया जा सकता। हमारा आंतरिक जीवन बाहर के पर्यावरण को आकार देता है और वे स्वयं उसकी गहनता से प्रभावित भी होता है। भौतिकता और उपभोक्तावाद से फैलते मौल संस्कृति के कैंसर को रोकना होगा। एक पर्यावरणवादी ने कहा है "कैंसर की कोशिका असामान्यता सक्रिय होती है क्योंकि वे स्वयं का विलक्षण गति से निर्माण करती है। ये विशिष्ट रूप से विनाशकारी भी होती है क्योंकि ये अपने आतिथ्य को मारकर ही समाप्त होती है। मनुष्य को कैंसर की कोशिकाओं की तरह नहीं होना चाहिए, उसे अपने किये कराये की अच्छी तरह से समझ होनी चाहिए जो उसे विनाश से बचा सके। क्या हम इस बात से जल्दी कुछ सीख पायेंगे और क्या हम जल्दी कुछ कर पायेंगे। मित्रों, हम उस युग की दहलीज पर खड़े हैं जिसकी छटपटाहट एक ही साथ पुरानी व्यवस्था की मृत्यु–वेदना और नई व्यवस्था की प्रसव–पीड़ा की घोषणा कर रही है.... "सभ्यता के अंत की ओर इंगित करने की बात तो दूर, वे उथल–पुथल भरे परिवर्तन जिनकी ओर मानवता अधिकाधिक तीव्रगति से बढ़ने को बाध्य है, "मानव के स्तर में अन्तर्निहित संभावनाओं को उन्मुक्त करने में" और "इस धरती पर इसकी नियति की संपूर्णता को, उसके यथार्थ की नैसर्गिकता को प्रकट करने में सहायक होगी।"

–सम्पादक

बहाउल्लाह ने कहा है...

यह वह युग है जब अदृश्य संसार कह उठा है "हे धरती, भाग्यशाली है तू क्योंकि तुझे ईश्वर का पदतल बनाया गया है तथा ईश्वर के शक्तिशाली सिंहासन के रूप में तुझे चुना गया है।" भव्यता का राज्य आश्चर्य से कह रहा है "मेरा जीवन तेरे लिये बलिदान हो जाये क्योंकि सर्वदयालु के प्रियतम ने ईश्वर के नाम की शक्ति द्वारा तुझ पर अपना साम्राज्य स्थापित किया है जिसका वचन भूत और भविष्य की सभी चीजों के लिये दिया गया है।' यह वह युग है जिसमें प्रत्येक सुगंधित वस्तु ने अपनी सुरभि मेरे सुवासित वस्त्रों से प्राप्त की है–उस वस्त्र से जिसने अपनी महक पूरी सृष्टि पर बिखेरी है। यह वह युग है जब शाश्वत जीवनदायी जल सर्वकृपालु की इच्छा से प्रवाहित हुआ है। शीघ्रता करो, अपने पूरे हृदय तथा आत्मा से इस अमृत जल के अपने हिस्से का पान करो, ओ स्वर्ग के निवासी!...

उठो, और सम्पूर्ण सृष्टि को यह संदेश दो कि सर्वदयालु ने रिज़वान की ओर अपने पग बढ़ाये हैं और उसमें प्रवेश कर लिया है। तब लोगों को राह दिखलाओ आनन्द के उस उद्यान की ओर जिसे ईश्वर ने अपने स्वर्ग का सिंहासन बनाया है। हमने तुम्हें अपनी सर्वशक्तिशाली तुरही बनाया है जिसका महानाद समस्त मानवता के पुनर्जीवित होने का संकेत है।...

कहो : यह वह स्वर्गोद्यान है जिसके वृक्षों की टहनियों पर अमृतवाणी ने यह प्रमाण अंकित किया है : "वह जो मनुष्यों के नेत्रों से ओझल था, संप्रभुता तथा शक्ति के साथ प्रकट हो गया है।" यह वह उद्यान है जिसकी पत्तियों का स्पंदन उद्घोषित करता है "हे स्वर्ग और पृथ्वी के निवासियों! पहले कभी जो प्रकट नहीं हुआ था वह अब प्रकट हो चुका है। वह जो सृष्टि के संसार से अब तक ओझल था, अब आया है। वृक्षों के मध्य से बहती बयार यह गुंजन कर रही है "वह जो सभी का संप्रभु ईश्वर है, प्रकट हो गया है। साम्राज्य ईश्वर का है," जबकि कलकल करती जलधार से यह ध्वनि आती है : "समस्त नेत्र प्रसन्न हैं क्योंकि जिसे किसी ने नहीं देखा, जिसके रहस्य को किसी ने नहीं समझा उसने आभा का आवरण हटा कर सौंदर्य का मुखड़ा दिखा दिया है।"...

सर्वोच्च प्रियतम आ चुका है। उसके दायें हाथ में ईश्वर के नाम का अमृत कलश मुहरबंद है। सौभाग्यशाली है वह व्यक्ति जो ईश्वर की ओर उन्मुख होता है, अपने भाग का पान करता है तथा कह उठता है : "जय हो तेरी, हे ईश्वर के चिन्हों को प्रकट करने वाले!" सर्वशक्तिमान के न्याय की सौगंध! सत्य की शक्ति द्वारा प्रत्येक गुप्त रहस्य प्रकट हो गया है। उसकी कृपा के प्रतीक रूप में प्रभु की सभी अनुकम्पायें पृथ्वी पर भेज दी गई हैं। शाश्वत जीवनदायी जल मनुष्यों पर बरसा दिया गया है। प्रिय के हाथ प्रत्येक पात्र को अमृत से भरने के लिये तैयार हैं। समीप आओ तथा एक क्षण की भी देर न करो।...

हे बहा के लोगों! आनन्द के अतिरेक के प्रवाह में बह चलो और अनन्त आनंद के उस महान दिवस का स्मरण करो, जब सर्वशक्तिमान प्रभु ने इस स्थान पर उद्घोष किया था, जहां वह अपने निवास स्थान से विदा होकर पहुंचे थे। यहीं से उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को अपने नाम की ज्योति का प्रकाश दिया था, वह नाम जो सर्वकृपालु का है। ईश्वर हमारा साक्षी है। यदि उस परमेश्वर के सभी गुप्त रहस्यों को प्रकट कर दिया जाये तो भूलोक और स्वर्ग के समस्त निवासी मूर्छित और मृत हो जायें। केवल वे ही बचेंगे जिन्हें ईश्वर बचाना चाहेगा, ईश्वर जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान है।

उसके ऊपर, जो संदेहविहीन प्रमाणों को प्रकट करने वाला है, कुछ ऐसा मादक प्रभाव प्रभु के शब्दों का हुआ कि उसकी लेखनी आगे कुछ न लिख सकी। इन शब्दों के साथ उसने अपनी पाती को समाप्त किया, "मेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं; मैं सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान, सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वज्ञाता हूँ।"

(बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, पृ. 26–31

United Nation

A Time for Renewal

पानी और साफ-सफाई

अंतर्राष्ट्रीय साफ-सफाई वर्ष 2008

सन् 2008 को अंतर्राष्ट्रीय साफ–सफाई वर्ष (आईवाईएस) के रूप में रेखांकित करने का उद्देश्य सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना और सन् 2015 तक उन लोगों, जिनकी बुनियादी सफाई तक पहुंच नहीं है, के अनुपात को आधा करने की आईवाईएस द्वारा निर्धारित तिथि तक पहुंचने की दिशा में प्रगति करना है। आईवाईएस की विषयवस्तु लोगों के जीवन को बचाने में सहायता करने के उद्देश्य से साफ–सफाई की दिशा में प्रगति की रफ्तार को बढ़ाना तथा आर्थिक एवं सामाजिक विकास को पोषित करना है।

अंतर्राष्ट्रीय साफ–सफाई वर्ष के रूप में सन् 2008 का आधिकारिक तौर पर समारम्भ 21 नवम्बर 2007 को किया गया था। जैसा कि महासचिव बान–की–मून ने इसके सभारम्भ के अवसर पर अपने संदेश में कहा था, ''सहस्त्राब्दी विकास के सभी लक्ष्यों से साफ–सफाई बहुत गहराई से संलग्न है और पर्यावरण, शिक्षा, स्त्री–पुरुष समानता और शिशु मृत्यु तथा गरीबी कम करने का जहां प्रश्न आता है वहां यह संलग्नता विशेषरूप से गहरी है।''

सितम्बर 2000 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के जिन आठ सहस्त्राब्दी लक्ष्यों को स्वीकार किया गया था वे इस अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को गरीबी घटाने तथा सभी लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ाने की चुनौती देते हैं। सितम्बर 2002 में जोहानिसबर्ग में आयोजित टिकाऊ विकास की विश्व शीर्ष सभा ने इन लक्ष्यों की पुनर्पुष्टि की थी और गरीबी उन्मूलन संकल्पों में साफ–सफाई को मुख्य रूप से जोड़ा था। बुनियादी सफाई के विषयों तक जिनकी पहुंच नहीं थी उनकी संख्या को आधा करने के लक्ष्य को जोहानिसबर्ग कार्यवाही योजना में परिभाषित किया गया था तथा पर्यावरणीय टिकाऊपन सुनिश्चित करते हुए सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों में इसे भी शामिल किया गया था।

वास्तविक साफ–सफाई

ऊपर से तो यह सामान्य बात लगती है जिसे विकसित संसार में अधिकतर लोग मानकर चलते हैं। लेकिन कम से कम 2 अरब 60 करोड़ लोगों–वैश्विक आबादी का कोई 41 प्रतिशत भाग–के पास शौचालयों या किसी भी प्रकार की बुनियादी साफ–सफाई की सुविधा नहीं है। इसके फलस्वरूप लाखों लोग अनेक प्रकार की रोकी जा सकने वाली बीमारियों से ग्रस्त होते हैं, जैसे पेचिश जो प्रति दिन हजारों जानें ले लेती है, विशेषतया छोटे बच्चों की।

साफ–सफाई के क्षेत्र में पहुंच को सुलभ बनाना एक अच्छा निवेश है क्योंकि :

मानवीय स्वास्थ्य के लिए सफाई अत्यावश्यक : ब्रिटिश मेडिकल जर्नल के एक पाठक सर्वेक्षण के अनुसार साफ–सफाई 1840 के बाद से अति महत्वपूर्ण मेडिकल एडवांस, या प्रगति है। समुन्नत सफाई व्यवस्था से लाखों लोगों को लगने वाले प्राणघातक रोगों, जिनमें हैजा, कृमि रोगों, पेचिश, निमोनिया और कुपोषण से निजात मिल जाती है। आज 2 अरब 60 करोड़ लोग, जिनमें लगभग एक अरब बच्चे शामिल हैं, बुनियादी साफ–सफाई की व्यवस्था के बिना रह रहे हैं। घटिया साफ–सफाई की स्थिति के कारण प्रति 20 सेकेण्ड में एक बच्चा मरता है। इसका अर्थ हुआ रोकी जा सकने वाली बीमारियों से प्रति वर्ष 15 लाख मौतें।

साफ–सफाई से आर्थिक लाभों की प्राप्ति : साफ–सफाई की समुन्नत व्यवस्था का आर्थिक वर्द्धन तथा गरीबी घटाने पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक हालिया अध्ययन के अनुसार साफ–सफाई व्यवस्था के सुधार पर खर्च किये गये प्रत्येक डॉलर से औसतन 7 डॉलर का आर्थिक लाभ होता है। इस क्षेत्र में निष्क्रियता की आर्थिक लागत बहुत मंहगी है। सफाई व्यवस्था में सुधार किये बिना जिन सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने का संकल्प विश्व सरकार ने किया है उनमें से एक का भी प्राप्त होना कठिन है।

साफ–सफाई से गरिमा और सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है : सफाई–शुचिता से विशेषतया महिलाओं और लड़कियों की गरिमा, निजता और सुरक्षा में वृद्धि होती है। स्कूलों में सफाई रखने से बच्चों, विशेषतया यौवनावस्था में पहुंचने वाली लड़कियों को शैक्षिक व्यवस्था में बने रहने में मदद मिलती है। शौच की सीमित स्थिति के कारण दीर्घकालिक कब्ज की शिकायतें बढ़ जाती हैं और यदि स्त्रियों को रात के अंधेरे में और एकान्त स्थानों में मलत्याग के लिए मजबूर होना पड़े तो उनके साथ अपराध करने के मौके बढ़ जाते हैं। समुन्नत साफ–सफाई सुविधाएं प्रदान करने से स्त्रियों और लड़कियों को स्वतंत्र चिन्तामुक्त अवसर प्राप्त होते हैं जिसका अर्थ है संपूर्ण समाज को लाभ प्रदान करना।

साफ–सफाई से पर्यावरण को सहायता : मानवजनित मल पदार्थ का बेहतर तरीके से निपटान करने से पेय जल के साधनों को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है। कृषि के लिए कम्पोस्टयुक्त कचरे का इस्तेमाल पर्यावरण के साथ ही आर्थिक तौर पर भी लाभदायक है। इस समय, संसार भर में 20 करोड़ टन से भी अधिक मानवजनित मल और अपरिमित मात्रा में गंदा पानी तथा ठोस कचरा–उठाये जाने और उपचारित किये जाने से रह जाता है जिससे पर्यावरण दूषित होता है और लाखों की संख्या में लोग रोगों के शिकार होते हैं और उनको मलिन स्थिति में रहने को बाध्य होना पड़ता है।

रिज़वान संदेश युवाओं के लिए

है रिज़वान के संग वायु में, नयी चेतना छाई।
युवा–ऊर्जा को करनी है, नव युग की अगुवाई।।

पूर्वाग्रह ने तुम्हें बहुत, भरमाया बहकाबों में,
तुम्हें न रहने दिया चैन से, नगरों और गाँवों में,
दिशाहीन कर दिया तुम्हारी, सारी प्रतिभाओं को,
धूल–धूसरित किया तुम्हारी, भावी आशाओं का,

यह वासंती भोर तुम्हारे लिए, रिज़वान संदेशा लायी है।
युवा–ऊर्जा को ही करनी है, नव युग की अगुवाई।।

देखो, कैसे भरा उमंगों से धरती का कण–कण,
पतझर में ही छिपा हुआ है, नया सृजन, नवजीवन,
तुम्हें नये रचनात्मक कार्य में, करनी है भागीदारी,
सारी दुनिया देख रही है, केवल बाट तुम्हारी,

क्योंकि तुम्हारे जीवन में भी है, वसंत श्री आई।
युवा–ऊर्जा को ही करनी है, नव युग की अगुवाई।।

तुम में शक्ति–शौर्य–साहस का, हुआ विलक्षण संगम,
तुम्हें प्रकृति से प्राप्त अपरिमित, प्रतिभा और पराक्रम,
अपनी क्षमता, तनिक दूसरी ओर मोड़कर देखो,
सृजन गंगा से जीवन की, धार जोड़ कर देखो,

थकी मनुजता के हित होगी, युवा शक्ति अमराई।
युवा–ऊर्जा को ही करनी है, नव युग की अगुवाई।।

बहा–लेखनी ने भर दिया, अमृत–बीजों से अमित खजाना,
सारी धरा पर तुमको, केवल उनको है फैलाना,
है आस्था कि स्वप्नों को, साकार रूप तुम दोगे,
ठिठुर रही मानवता को, गुनगुनी धूप तुम दोगे,

सत्य के प्रकाश की, तुमसे फैलेगी अरूणाई।
युवा–ऊर्जा को ही करनी है, नव युग की अगुवाई।।

–सेतवान यादव, खगड़िया, बिहार

रिज़वान का त्यौहार
‘‘त्यौहारों का सम्राट’’

दिव्य वसंत आ गया है, हे महालेखनी, सर्वदयालु का महापर्व शीघ्र ही निकट आ रहा है। अपने को तैयार कर ले और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष ईश्वर के नाम को मुखरित कर दे और उसका गुणगान कुछ इस प्रकार कर कि सम्पूर्ण सृष्टि पुनर्जीवित हो एक नई चेतना से भर जाये। बोल, चुप मत रह। हमारे आशीर्वादयुक्त नाम के क्षितिज पर कृपा का सूर्य चमक उठा है, क्योंकि स्वर्गों के रचयिता तुम्हारे स्वामी के नाम के आभूषण से नाम का साम्राज्य भी अलंकृत हुआ है। पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों के सम्मुख खड़ी हो, इस सर्वमहान नाम की शक्ति से स्वयं को सुसज्जित कर और उनमें से न बन जो प्रतीक्षा करते हैं।

रिज़वान (21 अप्रैल से 2 मई) के त्यौहार को बहाउल्लाह ने ‘‘सर्वमहान् त्यौहार’’ और ‘‘त्यौहारों का सम्राट’’ की संज्ञा दी है। बहाई वर्ष के ये पवित्रतम् दिन हैं। रिज़वान का पहला, नौवाँ और बारहवाँ दिन बहाई पवित्र दिवस के रूप में मनाया जाता है, जब बहाई अपने काम से छुट्टी लेकर अधिकांश समय प्रार्थना और पवित्र वचनों के पाठ में व्यतीत करते हैं।

रिज़वान का त्यौहार हम बहाउल्लाह के उस महान उद्घोष की वर्षगांठ के रूप में मनाते हैं जो उन्होंने सन् 1863 में बगदाद से इस्ताम्बूल जाने के बीच नजीब पाशा के उद्यान में डाले गये अपने 12 दिनों के पड़ाव के दौरान किया था।

तत्कालीन सरकार के आदेश के अनुसार बहाउल्लाह को बगदाद छोड़ देना था। इस खबर ने लोगों को भावविह्वल कर दिया था और वे एक–एक कर बहाउल्लाह के निवास के गिर्द एकत्र होने लगे थे। बहाउल्लाह ने अथाह दुःख के इसी समय को चुना जब निजी तौर पर उन्होंने अपने अवतारीय स्थान की जानकारी अपने कुछ अनुयायियों को दी। इस घोषणा के साथ ही बहाउल्लाह ने दुःख के क्षणों को आनन्द के पलों में परिणत कर दिया और तब से अब तक हम इसी उल्लास की वर्षगांठ रिज़वान के दौरान मनाते हैं।

आइये, इस वर्ष रिज़वान के 12 दिनों के दौरान हम इस बात पर विचार करें कि किस प्रकार हम अपने क्षेत्र में प्रमुख गतिविधियों की संख्यात्मक और गुणात्मक वृद्धि में अपना योगदान दे सकते हैं और कैसे हम सेवा के विभिन्न कार्यों के साथ पूरे समर्पित भाव से जुड़ सकते हैं।

दूसरा 45–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

नेशनल इंस्टीच्यूट कोओर्डिनेटिंग एण्ड एडवाइसरी बोर्ड द्वारा पंचगणी में 3 फरवरी से 19 मार्च 2008 तक दूसरा 45–दिवसीय व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। उच्च कोटि के मानव संसाधन विकसित करने हेतु सर्वांग प्रशिक्षण और व्यापक अनुभव की आवश्यकता को देखते हुए बोर्ड ने इस विशेष प्रशिक्षण का आयोजन किया। महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, बिहार और अध्ययन, किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रम की सभी पुस्तकों का प्रशिक्षण और उपवास एव अनिवार्य प्रार्थना के विधान जैसे विषयों पर कार्यशालाओं का आयोजन इस प्रशिक्षण में किया गया। अध्ययन के पश्चात् प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सामग्री से जुड़े सेवा कार्य का पूर्ण अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से पंचगणी समुदायसमूहों के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर होमविजिट, बच्चों की बहाई कक्षायें और किशोरों की कक्षाओं का संचालन किया।

दूसरे 45–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

सिक्किम से 47 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। जिसमें 7 महिलायें शामिल थीं। रूही पुस्तक 1 से 7 तक का गहन अध्ययन, विश्व न्याय मंदिर और अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र से प्राप्त संदेशों का पुस्तक–4 पर आधारित महात्मा बाब और भगवान बहाउल्लाह के जीवन की घटनाओं पर आधारित कहानियां और नाटिकाओं द्वारा बहाई परिवारों में दृढ़ीकरण के कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

गुजरात की संस्थान प्रक्रिया में बढ़ता संवेग

पृष्ठ 1 का शेष

यह सब आहवा, उमरकुई और नानापारा समुदायों में घटित हुआ। इन सभी अछुते क्षेत्रों में प्रत्यक्ष शिक्षण के लिए द्वार खुल गये और बड़ी संख्या में नामांकन दर्ज होने का यह एक कारण था। प्रत्यक्ष शिक्षण अभियानों में बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय अनुयायियों के साथ संस्थान स्नातकों की भागीदारी दर्ज की गई।"

एक अन्य रणनीति को अपनाया और प्रभावी ढंग से सिद्ध किया गया। इस रणनीति के अनुसार राज्य के संस्थान संयोजक ने प्राथमिक समुदायसमूहों का नियमित रूप से प्रतिमाह एक बार भ्रमण किया और इसके अलावा इन समुदायसमूहों के संयोजकों ने और अन्य प्रशिक्षकों ने भी अपने–अपने क्षेत्रों का नियमित रूप से भ्रमण किया। इस कार्य में सहायक मण्डल सदस्यों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, इससे समुदायसमूहों में एक नये उत्साह और स्फूर्ति का संचार हुआ।

हर्षोल्लास के साथ मनाया नवरूज़

पृष्ठ 1 का शेष

कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थनाओं एवं पवित्र लेखों से की गई। सभा को संबोधित करते हुए सलाहकार प्रवीण कुमार मल्लिक ने बहाई पंचांग, उपवास और नवरूज़ के विषय पर उपस्थिति मित्रों को जानकारी दी। समारोह में गीत–संगीत के कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

मेघालय की राजधानी शिलौंग में हुए नवरूज़ उत्सव में समुदाय के सदस्यों के अलावा कुछ अतिथि भी शामिल हुए। शिलौंग से सटे हुए अन्य दो बहाई समुदायों के मित्र भी इस अवसर पर उपस्थित थे। विगत कुछ महीनों से विकास की गतिविधियों के माध्यम से क्षेत्र के मित्रों को होमविजिट द्वारा सम्पर्क किये जाने से इस वर्ष के नववर्ष उत्सव में अधिकांश बहाई परिवार शामिल हुए। समारोह का संचालन डॉ. शशिकांत पाणिग्रही ने किया और इस अवसर के लिए बच्चों और किशोरों ने गीत–संगीत, कथा और नाटिका के माध्यम से उपस्थित मित्रों का मनोरंजन किया। इस समारोह को सफल बनाने में सुश्री मम्पी दास, श्री राजेश कुमार, श्रीमती पाणिग्रही और अन्य मित्रों ने अपना सहयोग दिया।

बहाई युवा सम्मेलन – 2008

"उत्तर भारत के युवाओं के लिए तीन माह की सेवा का सुनहरा अवसर"

प्रिय बहाई मित्रगण,

बहाई युवा समिति, भारत हर्षोल्लास से भरे हृदयों के साथ आप सबको बहाई युवा सम्मेलन 2008 के लिए आमंत्रित करती है। यह सम्मेलन युवाओं के लिए आनन्द से भरा एक ऐसा अवसर होगा जहाँ युवा नये मित्र बना पायेंगे तथा उनके साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान का अवसर पायेंगे तथा बहाई युवाओं को सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के कार्यक्रमों से, आने वाले दिनों में जोड़ने की योजनाओं की रूपरेखा पर चर्चा कर पायेंगे। पंचवर्षीय योजना के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तथा अधिक से अधिक समूहों द्वारा प्रभु धर्म में प्रवेश की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए योजना तैयार करेंगे।

"सेवा के जैसा ऐसा कोई कार्य नहीं जो प्रभु धर्म की सफलता सुनिश्चित कर सके। सेवा वह चुम्बक है जो दिव्यतम आशीष आकर्षित करता है। इसलिए जब कोई व्यक्ति सक्रिय होता है तब पावन चेतना द्वारा वह आशीर्वादित होता है।"

अब्दुल–बहा

युवा सम्मेलन में आप निम्न बातें सीखेंगे :

1–सहभागिता के माध्यम से सहयोगी खेल
2–लघु नाटिका, संगीत एवं हस्तकला
3–अपने अंदर छुपी हुई प्रतिभाओं को उजागर करना।
4–अपने मित्रों का सहयोग करना।
5–भाषण–कला एवं अभिव्यक्ति की क्षमता।
6–सस्वर प्रार्थनाओं का गायन।

सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम

जो युवा तीन माह की सेवा के लिए उठ खड़े होंगे उन्हें सेवा देने जाने से पहले 15 दिन का सघन प्रशिक्षण दिया जायेगा।

सेवा हेतु उठ खड़े हो

इस सम्मेलन का उद्देश्य युवाओं को अपने अंदर छिपी प्रतिभाओं को खोज निकालना और अपनी कलाओं एवं योग्यताओं को प्रभु धर्म के विकास में लगाना। यह सम्मेलन भारत में प्रभु धर्म की सेवा एवं पाइनियरिंग के विभिन्न अवसरों को ढूढ़ने व खासकर युवाओं को इससे अवगत कराने में मदद करेगा। इस सम्मेलन में भाग लेने से आपके जीवन में एक नवीन रूपांतरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जायेगी, साथ ही तीन माह की सेवा अवसर आपके व्यक्तिगत विकास एवं धर्म के सेवा के अवसरों के द्वार खोल देगा।

ई-मेल

शुल्क : 25 रु. प्रतिव्यक्ति

राजगीर, बिहार दिनांक 05 से 07 अप्रैल 2008 पता : दिगम्बर जैन सनातन धर्मशाला, धर्मशाला रोड, राजगीर, बिहार मो०–09430831237	लखनऊ, उत्तर प्रदेश दिनांक 11 से 13 अप्रैल 2008 पता : 10 जे. सी. बोस मार्ग, लालबाग, लखनऊ फोन नं. 0522–2610039, 6455186	भोपाल, मध्य प्रदेश दिनांक 15 से 17 अप्रैल 2008 पता : बहाई भवन, 142–ए, इन्द्रपुरी, BHEL गेट नं० 1, भोपाल दूरभाष : 0755–4260111

नियमित, सार्वभौमिक, त्यागपूर्ण और उदारता से दान दीजिए।

बहाई कोष

हम बहाई जिस सभ्यता का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं वह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों रूप से समृद्ध होगी। धन कुछ शर्तों पर ही स्वीकार्य होता है। हमें इसे ईमानदारीपूर्वक प्राप्त करना चाहिए। हमें इसे मानवता की भलाई के लिए खर्च करना चाहिए और पूरे समुदाय को ऊपर उठाना चाहिए, यह स्वीकार्य नहीं है कि कुछ लोग तो अत्यधिक धनाढय हों और अधिकांश लोग अपने जीवन की मूल आवश्कताएं तक पूरी नहीं कर पाते। एक ऐसे समाज का निर्माण करने के लिए जो दुःखों और अन्याय से मुक्त हो, हमें उदार और दानी होना चाहिए। भले ही हम कितने ही निर्धन क्यों न हों फिर भी हमें मानवता के विकास के लिए कुछ न कुछ देना चाहिए। क्योंकि सच्ची समृद्धि देने से ही प्राप्त हो सकती है। उदारता मानव आत्मा का गुण है और इसका हमारे निर्धन या समृद्ध होने से कुछ लेना देना नहीं है। निगूढ़ वचन में बहाउल्लाह कहते हैं, "दान देना और उदार बनना मेरे गुण हैं, कल्याण हो उसका जो स्वयं को मेरे गुणों से अलंकृत करता है।"

हमें याद रखना चाहिए कि हमारे पास जो भी है उसका स्रोत सर्वकृपालु, ईश्वर है। वह हमें जीवन जीने के साधन देता है। वह हमारी प्रगति का माध्यम है और जब हम बहाई कोष में देते हैं तो उसने जो दिया है उसका ही अंश देते हैं। इसलिए कोष में दान देना उदारता मात्र नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक कृपा और हमारी व्यक्तिगत जिम्मेवारी भी है। प्रिय धर्मसंरक्षक ने हमें कहा है कि

"हमें निश्चय ही उस फव्वारे या झरने के समान बनना चाहिए जो निरन्तर अपने संपूर्ण स्वत्व को लुटाता रहता है और निरन्तर किसी अदृश्य स्रोत से दुबारा भर जाता है। अपने बंधुओं के लिए निरन्तर देते रहना और गरीबी के भय से झिझकना नहीं तथा उस समस्त संपत्ति और कल्याण के 'स्रोत' पर निर्भर रहना, यही सच्चे ढंग से जीने का रहस्य है।"

अनेक बहाई कोष हैं और प्रत्येक किसी न किसी स्तर पर प्रभुधर्म के कार्य को सहायता देते हैं। इस प्रकार हमारे पास स्थानीय कोष, राष्ट्रीय कोष, महाद्वीपीय कोष और अंतर्राष्ट्रीय कोष हैं। व्यक्तिगत बहाई को इन सभी कोषों में दान देने का सौभाग्य है और सिर्फ बहाइयों को बहाई कोष में दान देने का अधिकार है। कोष में दान देना स्वैच्छिक कार्य है और यह गुप्त होता है क्योंकि यह मामला व्यक्ति और संस्था के बीच होता है और समुदाय को नहीं बताया जाता। संस्थाएं मित्रों से सामान्य अपील करती हैं, उन्हें कोष के महत्व के विषय में याद दिलाती हैं और उनके साथ इसकी आवश्यकता पर चर्चा करती है। अक्सर समुदाय अपने लिए कोष में दान का एक लक्ष्य निर्धारित कर लेता हैं। लेकिन व्यक्तिगत अनुयायियों के लिए राशि नहीं निर्धारित की जाती और उनसे पैसा मांगा नहीं जाता। यह स्वयं अनुयायियों पर ही छोड़ दिया जाता है कि वह इसमें सम्मिलित सिद्धांतों की अपनी समझ के अनुसार कितनी राशि विभिन्न कोषों में देते हैं। प्रिय धर्मसंरक्षक शोगी एफेंदी प्रत्येक बहाई से यह आग्रह करते हैं, *"राष्ट्रीय सभा के कोष के लिए जितना अधिक से अधिक हो सके त्यागपूर्वक योगदान दें, किन्तु वे इस कार्य के लिए कर्ज़ लेने से बंधुओं को निरुत्साहित करेंगे। हमें वही देने के लिए कहा गया है जो हमारे पास है, वह नहीं जो हमारे पास नहीं है। विशेषरूप से उस स्थिति में जब ऐसा कोई काम दूसरों को कष्ट पहुंचाता हो, ऐसे मामलों में हमें अपना निर्णय और अपनी समझदारी काम में लाने चाहिए और दूसरे निष्ठावान बहाइयों से सलाह करनी चाहिए।"*

हम स्वयं से पूछ सकते हैं, "यदि कभी कोई हमें यह नहीं बतायेगा कि हमें कोष में कितना देना होगा तब हम यह कैसे जान पायेंगे कि हससे क्या अपेक्षित है ?" जिस प्रकार से प्रभुधर्म के लिए योगदान दे रहे हैं इससे ईश्वर प्रसन्न है कि नहीं ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर इस वाक्यांश में निहित है : त्याग का रहस्य। बहाई धर्म में एक निर्धन द्वारा दिया गया एक सिक्का किसी अनुयायी के द्वारा दी गई बड़ी राशि के बराबर मूल्यवान हो सकता है। दान का मूल्य निर्धारण उस दान को देने के लिए किये गये त्याग पर निर्भर करता है। निश्चय ही कोई भी किसी दूसरे के त्याग की मात्रा का निर्णय नही कर सकता है। हममें से हर किसी को अपने किये गये त्याग को अपने हृदय में सोचना चाहिए।

जब हम यह निर्धारित करते हैं कि प्रभुधर्म के लिए हम कितना दान करेंगे, हमें याद रखना चाहिए कि कोष में दान देकर हम ईश्वर पर कोई उपकार नहीं कर रहे हैं। ईश्वर को हम लोगों की जरूरत नहीं है। हम कोष में जो दान देते हैं वह एक बेहतर विश्व के निर्माण के लिए है। यह समाज के प्रति हमारे दायित्वों को पूरा करने का एक तरीका है। त्याग का अर्थ है उच्च को प्राप्त करने के लिए निम्न को देना। त्याग करने से पीड़ा होती है लेकिन वास्तव में यह सच्ची खुशी लाता है। *"जहाँ तक प्रभुधर्म के हित के लिये भौतिक त्याग करने का संबंध है उन्होंने यह कामना प्रकट की है कि आप यह समझ लें कि प्रभुधर्म के सामान्य हित व्यक्ति विशेष के हितों से पहले आते हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के लिए योगदान का स्थान राष्ट्रीय तथा स्थानीय कोषों और मंदिर कोष के लिए योगदान के बाद ही आता है।*

यह एक सामान्य निर्देश है। अवश्य ही यदि कोई दूसरों को व्यक्तिगत रूप से सहायता देने में समर्थ है तो यह भी एक वांछनीय और सराहनीय कार्य है।"

बहाई उपासना मंदिर कोष को सुदृढ़ बनायें।

समाचारचित्र

औरंगाबाद के पुलिस आयुक्त द्वारा श्री माहियार महरीन हाल ही में सम्मिानित किया गया। श्री महरीन विगत दो दशकों से अपने परिवार के साथ औरंगाबाद में एक पायनीर के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। श्री महरीन विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में अपने उल्लेखनीय कार्यों द्वारा जाने जाते हैं।

खाड़ी देशों में प्रख्यात निर्माण कम्पनी एमार ग्रुप ने पिछले सप्ताह महिला गोल्फ टूर्नामेंट के यूरोपियन सत्र के प्रमुख प्रायोजक के नाते टूर्नामेंट के विजेता को मिलने वाले पुरस्कार प्रतीक का अनावरण किया। यह पुरस्कार प्रतीक दिल्ली के बहाई उपासना मंदिर की आकृति में बनाया गया है। टूर्नामेंट इस माह बैंगलौर में होगा।

बहाई वर्ष नवरूज़ का उत्सव विश्व भर में मनाया गया। पवित्र भूमि में बहाई विश्व केन्द्र में भारत से अनेक युवा स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। वहां हुए उत्सव में इन युवाओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और भारतीय संस्कृति की छलक का दर्शन उस अवसर पर आये हजारों लोगों को कराया।

तमिलनाडु के उदगमंगलम् समुदायसमूह में नववर्ष का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया, जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों की बहाई कक्षा के बच्चों ने भाग लिया और गीत–संगीत के रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

समाचारचित्र

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2008 को पुणे (महाराष्ट्र) में विमान नगर के जागर्स पार्क में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर तीन सौ से अधिक महिलायें और लगभग सौ से अधिक पुरुषों ने भाग लिया। इस समारोह में श्रीमती शोभना ताई ने "आधुनिक युग में महिलाओं का कर्त्तव्य", श्रीमती प्रभाताई चाफेकर ने "आधुनिक युग में माताओं की भूमिका" और श्रीमती मार्ज़िया दलाल ने "किशोरों सशक्तिकरण के कारक" पर महिलाओं का मार्गदर्शन किया।

इन्दौर के बहाई भवन में एक समीक्षा बैठक का आयोजिन किया गया, जिसमें खरगोन और सनावद समुदायसमूह के 8 मित्रों ने भाग लिया। इस बैठक में दीपा एवं श्रद्धा की प्रस्तुति पर समीक्षा की गई, उसके उपरान्त विश्व न्याय मंदिर के 25 मार्च 2007 के प्रपत्र को पढ़ा गया। इस बैठक का संचालन सहायक मण्डल सदस्या श्रीमती अलका कुमार द्वारा किया गया।

श्री मोहन विजय कुमार विशेष अवसरों पर जैसे 26 जनवरी, 15 अगस्त, होली, दिवाली, दुर्गा पूजा और गुरुपर्व में नागरिक सुरक्षा समिति की ओर से विशेष सेवायें प्रदान करते हैं जिसके लिए उन्हें दक्षिण दिल्ली के सहायक पुलिस आयुक्त द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मध्यप्रदेश के बदकर रीवा समुदायसमूह के श्री रोशनलाल पटेल का विवाह सुश्री स्नेहलता पटेल के साथ 17 फरवरी 2008 को बहाई विधिविधान के साथ आध्यात्मिक सभा के सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 **Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2006-07-08**
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2006-07-08

बहापुर पुकारे...

प्रतिवर्ष विभिन्न दूतावासों के प्रभारी, मंत्रीगण एवं सरकारी अधिकारी, संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए 20 मार्च को उपासना मंदिर के प्रांगण में नववर्ष उत्सव का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस विशेष समारोह में 200 से अधिक अतिथि पधारे और मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुति का उन्होंने आनन्द उठाया। इन विशेष अतिथियों में भारत के हरित क्रांति के प्रेरक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन भी उपस्थित थे। इनके अलावा जाने–माने व्यक्तियों में श्री जॉर्ज वर्गिस, श्री कार्तिकेयन, प्रो. ताहिर महमूद, श्री मिलन कोठारी और कुलदीप नायर भी थे।

रोमानिया के अर्थ और वित्त मामलों के मंत्री श्री वरूजन वोस्गानियन एक विशेष दल के साथ 1 मार्च को उपासना मंदिर आये। दल के साथ रोमानिया के भारत स्थित राजदूत श्री वासिले सोफीनेती भी थे, महामहिम राजदूत और उपासना मंदिर का एक स्नेहमय सम्बन्ध है। मंत्री महोदय ने बहाई धर्म के सिद्धांत और विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विकास कार्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

बहाई उपासना मंदिर के जन–सम्पर्क अधिकारियों तथा अपनी पत्नी तथा पौत्री के साथ उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल

उपासना मंदिर के सौन्दर्य और आध्यात्मिक माहौल ने अतिथियों को अतिप्रसन्न किया।

साउथ अफ्रीका के सामाजिक विकास मंत्री श्री ज़ोला सिडनी स्कवैया ने 2 मार्च को बहाई उपासना मंदिर और सूचना केन्द्र का भ्रमण किया। उन्हें बहाई धर्म के इतिहास की जानकारी दी गई और विशेष रूप से विकासकार्यों और बहाइयों द्वारा विश्व में चल रहीं मूल गतिविधियों के बारे में भी बताया गया। शिक्षा पर बल और साथ ही साथ इतने विस्तृत रूप से बहाइयों द्वारा किये जा रहे कार्यों को सुनकर वह बहुत प्रभावित हुए।

उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री टी. वी. राजेश्वर ने 6 मार्च को अपनी पत्नी और पौत्री के साथ बहाई उपासना मंदिर का भ्रमण किया। अतिथि समूह के आते ही उन्हें उपासना मंदिर के प्रार्थना सभागृह में ले जाया गया। राज्यपाल की मातृभाषा तमिल में एक प्रार्थना का गायन किया गया। उसके उपरान्त उन्हें सूचना केन्द्र लाया गया और फिर विशेष अतिथि कक्ष में लगे चित्रों को देखने के लिए ले गये। राज्यपाल और उनकी पौत्री ने बहाई धर्म से सम्बन्धित अनेक प्रश्न किये।

दिल्ली में हाल ही में हुए राज्य, कानून और धर्म पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसका आयोजन एसोशियशन ऑफ स्कोलर्स ऑफ रिलिज़न एण्ड लॉ, अमिटी विद्यापीठ और एमिकस जूरिस कम्पनी द्वारा आयोजित की गई थी। इस सम्मेलन में आये विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का उपासना मंदिर में स्वागत किया गया। अति महत्वपूर्ण अतिथियों के साथ भारत के विधि आयुक्त डॉ. ताहिर महमूद भी थे।

साउथ अफ्रीका क नौ सेना अधिकारी दल ने 14 मार्च को उपासना मंदिर का भ्रमण किया। मंदिर की शिल्पकला की प्रशंसा करते हुए दल ने बहाई सिद्धांतों की सराहना की।

इंग्लैंड और वेल्स के सर्वोच्च न्यायाधीश लॉर्ड फिलिप्स 20 मार्च को उपासना मंदिर आये। इस अतिथि दल में ब्रिटेन के विभिन्न उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और उनकी धर्मपत्नियाँ भी शामिल थीं। मंदिर के जन–सम्पर्क विभाग की ओर से श्री शत्रुघ्न जीवनानी और सुश्री सुभा मोहन ने अतिथियों का स्वागत किया।

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचरपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2006-07 08
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2006-07-08
प्रकाशक का नाम : डॉ. ए. के. मर्चेंट (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : डॉ. ए. के. मर्चेंट (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.4. 2008
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

डॉ. ए. के. मर्चेंट द्वारा संपादित, प्रकाशित और मुद्रित समाचारपत्र का स्वामित्व राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110001,
मुद्रण : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 (डॉ. ए. के. मर्चेंट : सम्पादक एवं प्रकाशक)